# १२ यथार्थ-७ : मानव धर्म एक, समाधान अनेक।

**दिनांक -५/१०/११**

मानव धर्म एक, समाधान अनेक। जीवन नित्य, जन्म मृत्यु एक घटना | मानव धर्म अपने में सुख होना है | यह सुख, शांति, संतोष, आनंद स्वरुप में होना पाया जाता है | यह समाधान पूर्वक होना पाया जाता है | समाधान प्रधान रूप में अनुभव, विचार, व्यवहार रूप में होता है | व्यवहारही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होता है | इसके लिये व्यक्ति, परिवार ही जिम्मेदार है | व्यक्ति में समाधान ही मानव धर्म है | परिवार में समाधान, समृद्धि ही मानव धर्म है | अखण्ड समाज में समाधान, समृद्धि, वर्तमान में विश्वास ही मानव धर्म है | सार्वभौम व्यवस्था में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण ही मानव धर्म है |

दूसरे क्रम में समाधान =सुख, समाधान समृद्धि =सुख शांति, समाधान समृद्धि अभयपूर्वक सुख शांति संतोष, समाधान, समृद्धि, अभयता, सहअस्तित्व अनुभव प्रमाण सहज सुख, शांति, संतोष, आनंद प्रमाणित होता है | सुख, शांति, संतोष, आनंद ही जीवन मूल्य हैं | जीवन मूल्य का प्रमाण सह-अस्तित्व सहज फलन है | सह-अस्तित्व में अनुभव ही आनंद कहलाता है | उक्त चारों प्रकार सुख का ही स्वरुप है | सुख ही उक्त चारों नाम से प्रसिद्धहै | सुख, सुख की निरंतरता, सुख की उत्कटता, सुख की पराकाष्ठा ही सुख, शांति, संतोष, आनंद रूप में जाना जाता है | इस तरहजीवन मूल्य परम्परा में प्रमाणित होना अखण्ड समाज का सूत्र है | अखण्ड समाज में ही मानव धर्म एक समाधान अनेक | हर व्यक्ति बहुमुखी(आयामी) अभिव्यक्ति | हर आयाम, कोण, परिप्रेक्ष्य में समाधान ही प्रमाणित होता है | यही मानव धर्म है | क्योंकि समाधान=सुख=मानवधर्म है | सुख के चार स्वरूपों में जी पाना ही मानव धर्म है | ये चारों पूरा भाग मानव धर्म ही कहलाता है | यह सहअस्तित्व में अनुभव सहज प्रकटन ही है | यही सार्वभौम व्यवस्था व अखण्ड समाज का आधार है | हर समझदार व्यक्ति अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था को चाहता ही है | इस प्रकार मानव धर्म को पहचाना जाता है |

जीवन नित्य, जन्म मृत्युएक घटना | शरीर रचना और गठनपूर्ण परमाणु के रूप में जीवन के संयुक्त रूप में ही मानव चैतन्य प्रकृति में गण्य होता है | ऐसे ही जीव संसार में भी अण्डज, पिण्डज प्रक्रिया विधि से कुछ शरीर में जीवन का होना पहचान में आता है | इसका स्पष्ट स्वरुप समृद्ध मेधस सम्पन्न होना, सप्त धातुओं से शरीर निर्मित होना हो और मानव के संकेतों को ग्रहण करता हो | यही जीवन होने का प्रमाण है जीव संसार में | इस प्रकार हम निष्कर्ष में आते हैं कि केवल मानव ही विकसित चेतना विधि से जीने का अधिकारी है | जीव चेतना विधि से मानव जो भी संकेत प्रसारित करता है, वह सब का सब क्रमागत नियति विधि से जागृतिक्रम में ही गण्य है | जागृतिपूर्वक जो कुछ भी संकेत प्रसारण होता है वह नियम, नियंत्रण, संतुलन के अर्थ में होता है | इस प्रकार जीव संसार एवं मानव के मध्य में प्रकाशन होता है |

जीवन गठनपूर्ण परमाणु होने के आधार पर अपरिणामी होना अर्थात मात्रात्मक परिवर्तन नहीं हो पाना देखा गया है | जीवन में केवल गुणात्मक परिवर्तन ही प्रयोजन है | गुणात्मक परिवर्तन केवल मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना ही है | सर्वप्रथम अपराध मुक्त स्वरूप में मानवीयतापूर्ण मानव, विचार में स्वतंत्रता रूप में श्रेष्ठतर देव मानव और स्वतंत्र पूर्ण दिव्य

मानव | इस क्रम में अर्थात इस नियति क्रम में इस निष्कर्ष में आते हैं कि जीवंत मनुष्य, जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में सहज कार्यक्रम है | शरीर से जीवन यदि शरीर को नकार देता है तो उस स्थिति में मृतक माना जाता है | इस गवाही से यही स्पष्ट होता है कि मानव का जो भी कार्यकाल है वह स्वस्थ्य शरीर तक ही है | शरीर कोस्वस्थ बनाये रखने का उपयोगिता, पूरकता को स्पष्ट होना है | यह स्पष्टता जीवन सहज है | जीवन जागृतिपूर्वक ही शरीर को स्वस्थ रखता है, भ्रमवश रोगी बनाता है | इस पद्धति से सोचने पर हमें यह स्पष्ट होता है कि शरीर को स्वस्थ रखना भी एक कार्यक्रम है | इसके लिये स्पष्ट कार्यक्रम यही है कि सभी परिवारों में स्वास्थ्य को बनाये रखने का ज्ञान, विवेक, विज्ञान स्पष्ट होना आवश्यक है | हर परिवार, परिवारजनों कीस्वस्थता को बनाये रखना चाहते हैं | कम से कम हर व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहताही है | स्वास्थ्य बनाये रखने का अधिकार, शरीर का मर्यादा और जीवन का मर्यादा का ज्ञान सम्पन्नहोने के आधार पर सफल होता है | सफल होना ही लोकव्यापीकरण है | सभी परिवारों में ऐसा अधिकार समा जाना अथवा स्पष्ट होना शिक्षा विधि से ही हो पाता है | इसके लिये केवल चेतना विकास मूल्य शिक्षा ही शरण है |

शरण का मतलब सम्पन्न होने से है अर्थात चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत व प्रमाणित होने से है | इसी क्रम में मानव अपने मर्यादा का पालन कर पाता है, नहीं तो नहीं कर पाता, भ्रम होता ही है अर्थात चेतना को पहचान नहीं पाना अथवा विकसित चेतना को पहचान नहीं पाना ही अपराध है | मानव को आदर्शवादी क्रम में, भौतिकवादी क्रम में जीव ही माना है | मानव में ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना प्रमाणित होता है | इसे भली प्रकार से प्रमाणित कर देखा है | यह हर मानव को अपेक्षित है | हर मानव जागृतिको वरता है न कि भ्रम को | इस सिद्धांत के आधार पर हर मानव जागृत होना ही चेतना विकास है | क्योंकि जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम है | इसे प्रयोग कर देखा है | मानव चेतना में ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का सूत्र समाया रहता है;क्योंकि विकसित चेतना में तीनों प्रकार से जीने वाले जागृत मानव का सूत्र समाया रहता है | विकसित चेतना का मतलब यही है | यह जीवन ज्ञान प्रधान विधि से समझ में आता है | इस क्रम में मानव अपने त्व सहित व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण प्रस्तुत कर पाता है | यथार्थता का स्वरुप मानव में ही स्पष्ट होता है न कि जीवों में अर्थात जीव चेतना विधि से | मानव सर्वशुभ में जीने के स्वरुप में मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी है | यही उपयोगिता, पूरकता का अभिव्यक्ति है | इसे हर व्यक्ति प्रमाणित कर सकता है | यही भ्रममुक्ति, अपराधमुक्ति का प्रमाण है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

**- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत**